"44वें स्वतंत्रता दिवस के शुभअवसर पर प्रधानमंत्री श्री पी॰वी॰ नरसिंह राव द्वारा 15 अगस्त, 1991 को लाल किले, दिल्ली से दिया गया भाषण।"

प्यारे देश वासियो, भारत के 44वें स्वतंत्रता दिवस के इस शुभ अवसर पर मैं आप सबको अभिवादन करता हूं। मैं एक साधारण कार्यकर्ता हूं जिसका जन्म एक छोटे से गांव में हुआ था। लोकतंत्र की महिमा है, आपका आशीर्वाद है और मेरा अहोभाग्य है कि मैं आज इस ऐतिहासिक लाल किले से आपको सम्बोधित कर रहा हूं। इस आजादी के लिए कितने लोगों ने कितनी कुर्बानियां दीं, उसे अपने खून से सींचा, ये आप सब लोग जानते हैं। लोकतंत्र का यह महारथ अबाध रूप में चलता आता है और चलता रहेगा।

इन 44 वर्षों के संदर्भ में, दौरान में दस बार लोकसभा के चुनाव हुए। आखिरी दसवां चुनाव अभी हाल में सम्पन्न हुआ। इन चुनावों में हमने आपकी प्रसन्नता देखी, आपकी नाराजी देखी, लेकिन समय-समय पर जो भी आपने हमें प्रदान किया उसे हमने सिर-आखों पर लगाया और आप ही के आदेश पर हम चलते रहे। हम आपके हैं, आपमें से आते हैं, आपके रहेंगे, यही हमारा पता है, यही हमारी पहचान है। इसके अलावा हमें किसी पहचान की कोई आवश्यकता नहीं है। दसवीं लोकसभा का चुनाव एक बड़ी दुःखद घटना की छाया में हुआ। राजीव गांधी की निर्मम हत्या ने देश को जैसे निश्चेष्ट बना दिया। जिस नौजवान के बारे में सोचा जाता था कि इसने देश के नेतृत्व की समस्या को अगले बीस-पच्चीस वर्षों तक पक्का कर दिया है, उसका हल निकाला है, उसके ओझल होते ही जैसे हमारी आंखों के सामने अंधकार छा गया। लेकिन किया क्या जाये? जातस्य मरणम् ध्रुवम्। हम जानते हैं कि जो आता है उसे जाना है। समय पर जाता है तो परेशानी नहीं होती, असमय आता है तो सबको परेशानी हो जाती है। आज तो हम इतना ही कह सकते हैं कि राजीव जी ने इस देश के लिए एजेंडा बनाया था, जो कार्यक्रम बनाया था भविष्य का, जो उन्होंने रास्ता दिखाया था उसी रास्ते पर हम चलेंगे और यही संकल्प लेके मैं आपके सामने यह प्रतिज्ञा कर रहा हूं।

आज हमारा देश किस नुक्कड़ पर खड़ा है ये मैं आपको बताना चाहता हूं । ये सरकार आज केवल 55 दिन पूरे कर चुकी है । इन 55 दिनों में कुछ हमने निर्णय लिये । इन 55 दिनों में कुछ बालारिष्ट दोषों से हमने अपने आपको बचाया । जनता ने हमें जनादेश तो दिया था सरकार बनाने का लेकिन उसके लिए जो आवश्यक बहुमत की जरूरत थी उसमें थोड़ी सी कसूर उठा रखी थी । फिर भी हमने यही समझा कि जनता का आदेश है, हमें सरकार बनाना है, चलाना है और देश की बहबूदी के लिए जितना हमसे हो सकता है उसमें कोई कसर उठा नहीं रखना है । इसी आदेश को लेकर हम आगे बढ़े हैं । अन्य राजनीतिक दल हमें सहयोग दे रहे हैं और स्थिति आशाजनक है । मुझे पूरा-पूरा विश्वास है कि इस सरकार की स्थिरता में किसी प्रकार की शंका-कुशंका के लिए कोई गुंजायश नहीं रहेगी ।

मैं आपको दो शब्दों में ये बताना चाहता हूं कि इस सरकार को विरासत में क्या मिला था ? इस विरासत में हमें मिला--धर्मांधता और जाति द्वेष का एक दूषित वातावरण, सामाजिक वातावरण । आर्थिक व्यवस्था ऐसे संकट में पहुंची थी जैसा संकट स्वतंत्र भारत के समूचे इतिहास में देखने को नहीं मिला था । हमारी साख, आर्थिक साख एकदम लुप्त सी हो गयी थी । एक-दो हफ्तों में हम अपने कर्ज चुकाने में असमर्थ से होने वाले थे । ऐसी दशा में मैंने हुकूमत की बागडोर संभाली । कई ऐसी समस्याएं थीं जो पहले से चली आती थीं लेकिन बहुत जटिल हो गयी थीं । पिछले दो साल में । वो भी हमें विरासत में मिलीं । ऐसा लगता था कि पानी सिर से ऊंचा चल रहा, उठ रहा है । देर के लिए कोई गुंजायश नहीं है और पसो-पेश करना तो आत्म-हत्या सदृश्य होगा । इसलिए हमें बड़ी तेजी से कुछ कदम उठाने पड़े । साहसपूर्ण निर्णय हमने लिये और उन निर्णयों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो स्थिति और बिगड़ने वाली थी उसको हमने रोक लिया, उस बिगाड़ को रोक लिया । अभी कुछ करना है लेकिन इतना जरूर हुआ है कि जो और हमारी दुर्दशा हो सकती थी वो रुक गयी है । आप जानते हैं कि हम इस देश में कई चीजें बनाते हैं लेकिन कई ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम आयात भी करते हैं । कुछ ऐसी चीजें हैं जिनको बनाते तो हैं लेकिन हमारी जरूरियात के लिए वो काफी नहीं होती हैं इसलिए फिर भी बाहर से मंगाना पड़ता है, जैसे-- मिट्टी का तेल, डीजल, खाद्य तेल, फर्टिलाइजर, रासायनिक खाद आदि । कुछ हमें बाहर से मंगाना

पड़ता है । हमारा रुपया बाहर नहीं चलता इसलिए हमें विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होती है । हमारी विदेशी मुद्रा का भंडार करीब-करीब समाप्त हो चुका था । आज भी हमारी हालत अच्छी नहीं है । इसलिए हमें अपने निर्यात बढ़ाने होंगे । हम अपने देश में बनने वाली चीजों को बाहर भेजेंगे, उनको बेचेंगे, तो हमें विदेशी मुद्रा मिलेगी, वरना नहीं मिलेगी । इसलिए हमने सब से पहले यह लाइसेंस, परमिट वगैरह का चक्कर जो यहां चलता था, जिसके चलते लोगों को परेशानी होती थी, कोई काम आगे नहीं बढ़ता था, इस चक्कर को हमने काट दिया है और आज जैसे एक विमुक्ति कर दी है उन लोगों को जो इस चक्कर में फंसे हुए थे । हमने, विदेशी मुद्रा का जो एक्सचेंज होता है, विनिमय दर को थोड़ा सा बदल कर अपने निर्यातों को बढ़ाने का पूरा-पूरा इंतजाम किया है और हम यह आशा करते हैं, बल्कि हमें यह विश्वास है कि आगे आने वाले दिनों में हमारे निर्यात बढ़ेंगे और पर्याप्त मात्रा में हमें विदेशी मुद्रा मिलेगी ।

हमने नया वार्षिक बजट पेश किया है अगले साल के लिए और इस बजट में हमने कई योजनाएं ऐसी बनाई हैं, जो जनोपयोगी हैं और विशेषकर हमारे ग्रामीण जनता की जो वहां की आवश्यकतायें हैं, उनको ध्यान में रखकर यह किया गया है । मैं थोड़े, कार्यक्रम आपके सामने रखना चाहता हूं । वैसे बहुत कुछ हमने किया है या करना चाहते हैं, लेकिन समय नहीं है, थोड़े ही शब्दों में, मैं आपके सामने इन बातों को रखूंगा । आप जानते हैं कि राजीव जी के नाम से हमने एक वृहद कार्यक्रम बनाया है, जिससे इस देश में प्रत्येक गांव को पीने का पानी मिले । हम जानते हैं कई गांवों में पानी है, मुहैया किया जा चुका है । पिछले चालीस वर्ष से हम यह काम कर रहे है । लेकिन कुछ ऐसे गांव रह गये हैं, जो बहुत दूर हैं या यहां जमीन में पत्थर हैं, जहां पानी देने के लिए और ज्यादा कठिनाई होती है । तो ऐसे गांव आज कोई अस्सी हजार गांव हम ले रहे हैं, जिनमें हम राजीव जी के नाम से चलाये हुए इस कार्यक्रम के अनुसार हम पीने का पानी देंगे । हमारे यहां पिछड़े वर्ग हैं, जिनकी हालत सुधारनी है । उसके लिए हम एक निगम बना रहे हैं, जिससे उनको सहायता मिलेगी । हम जानते हैं इस देश में कभी-कभी सांप्रदायिक दंगे होते हैं । उन दंगों मे लोग मर भी जाते है और अपाहिज भी हो जाते हैं, विकलांग हो जाते हैं और खास कर जब बच्चे अनाथ हो जाते हैं तो उन्हें देखने वाला नहीं रहता । उन बच्चों के लिए हमने एक राष्ट्रीय कोष शुरू किया है । उस कोष से इन बच्चों की देखभाल की जाएगी, उनकी तालीम का, तरबियत का इंतजाम किया जाएगा और उन्हें अच्छे नागरिक के रूप में फलने-फूलने का मौका दिया जाएगा ।

19

हमारे देश में कभी-कभी मजदूरों की मजदूरों की रोजगारी छूट जाती है। जब छूट जाती है, तो फिर उनको पूछने वाला कोई नहीं रहता। उनके लिए हमने एक योजना बनाई है, जिसमें उनकी मदद भी की जाए और एक तरह का पेशा उनसे छूट जाएगा, तो किसी दूसरे काम में उनको फिर से ट्रेनिंग देकर लगाने का इंतजाम किया जाएगा, ताकि हमारे मजदूर भाई एकदम बेरोजगार न हो जायें और उन्हें परेशानी न हो। आप जानते हैं हमारे गांव-गांव में बहुत अच्छे दस्तकार हैं। कौशल में वो किसी से कम नहीं हैं, लेकिन उनके पास जो औजार हैं, गांव वालों को पता होगा कि आज भी बहुत पुराने औजार हैं, कोई पांच लाख-साढ़े पांच लाख गांव इस देश में हैं। हर गांव में आप अंदाजा कीजिए कुल मिलाकर कितने दस्तकार इस तरह के होंगे जो पुराने औजार से काम कर रहे हैं। हमने एक योजना बनाई है, जिसके अनुसार इन सभी दस्तकारों को आधुनिक औजार देने का इंतजाम किया जाएगा, ताकि आज जो हो रहा है, जो वहां का दस्तकार शहर में चला जाता है, वहां उसके और अच्छे होते हैं, ज्यादा उसकी कमाई होती है और गांव छोड़ कर जो जाता है, तो शहर में भी परेशानी हो जाती है। इसलिए गांव के दस्तकारों को अच्छे औजार देने से उनको शहर जाने की आवश्यकता नहीं होती और वहीं अपनी वह कमाई बढ़ा सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि हमारा पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम, सार्वजनिक वितरण प्रणाली जिसके अनुसार हम यहां फेयर प्राइस शॉप वगैरह खोलते हैं, दुकानें ये आज तक शहरों में ही ज्यादा चलता है, गांव तक यह पहुंचा नहीं है। हमने यह फैसला किया है कि दूर-दराज के जो ब्लाक हैं, आदिवासी इलाकों के, रेगिस्तानी इलाकों के, बहुत पिछड़े हुए इलाकों के, उन इलाकों में से कोई 1500 ब्लाक हम लें, जिनमें हमारा प्रयास होगा अगले साल, डेढ़ साल में कि एक-एक गांव में हम ऐसी दुकानें खोलें जिनमें रोजमर्रा जरूरत की वस्तुएं हम मुहैया कर सकें अच्छे भाव पर, सस्ते भाव पर और मैं समझता हूं कि यह हमारे गांव वालों के लिए एक बड़ा वरदान होगा।

आपको यह भी मालूम है हमारे (तालियां) गांवों में आए दिन होते हैं, झगड़े, जमीन के बारे में जमीन की सरहदों के बारे में झगड़े इतने बढ़ जाते हैं कि असली जो झगड़ा है वो तो पीछे रह जाता है और ये जो सिर फूटते हैं, वहां हिंसा जो होती है, मुकद्दमेबाजी होती है, सालों-साल जो चलती है और लोगों

20

को एकदम बर्बाद कर देती है । इसका कारण यह है कि वहां की जमीनों के जो रिकार्ड हैं वे ठीक नहीं है । कई राज्यों में ऐसे रिकार्ड हैं जो बहुत कच्चे हैं, नाफिक्स हैं और कई राज्यों में तो शायद रिकार्ड ही नहीं हैं । इस अशांति को रोकने के लिए एक ही तरीका यह हो सकता है कि हम गांवों के रिकार्ड, गांव में जो जमीनों के रिकार्ड हैं जमीन का प्रोप्राइटरशिप के बारे में, उसकी मिल्कीयत के बारे में जो रिकार्ड हैं, उनको ठीक-ठीक कर लें तो फिर कम से कम लोगों को पता तो चलेगा कि किसकी कौन सी जमीन है, किस का अधिकार है, किसका नहीं है । हम एक अभियान चलाना चाहते हैं सारे भारत में जिसमें एक-एक गांव में हमारे जमीनों के रिकार्ड को ठीक-ठाक किया जाए और सही सही रिकार्ड उपलब्ध कराने में पूरी मदद मिले । इंदिरा महिला योजना (तालियां) राजीव जी ने हमें दी थी, उस पर कुछ अमल नहीं हुआ पिछले दो साल में, तो फिर से उसे उठायेंगे और उसे कार्यान्वित करेंगे । पंचायती राज की व्यवस्था के सिलसिले में जो कानून बना था उसे यहां पास नहीं होने दिया गया आप जानते हैं दो साल पहले, फिर से हम उसे पास करायेंगे और उसको कार्यान्वित करेंगे । मैं, हमारे जो भाई अन्य देशों में हैं, जिनको एन॰आर॰आईज॰ कहते हैं नान रेजीडेंट इंडियंज़ उनसे बताना चाहता हूं कि हमने उनका स्वागत किया है, आज मैं उनका स्वागत फिर से कर रहा हूं, उनके लिए यहां कई हम सहूलियतें देना चाहते हैं, पूरा बताने के लिए समय नहीं है, लेकिन मैं मुख्तसर में यह कहना चाहता हूं कि उनका हम स्वागत करते हैं और जो-जो उनको सहूलियतें हैं अपना पैसा लगाने के लिए, यहां उद्योग चलाने के लिए और यहां से अपने जो संबंध पुराने है, जन्म के, उनको दृढ़ करने के लिए वे भी चाहिए, वह हम करने के लिए तैयार हैं । हमें बड़ा गर्व है कि ये लोग लाखों (तालियां) की तादाद में दूसरे देशों में गए हैं, वहां खुशहाल हैं, कमा रहे हैं और अपने देश की सेवा करने में भी आज तो तत्पर हैं । मैं फिर से एक बार उन सब का स्वागत करता हूं । अब मैं आपके सामने कुछ ज्वलंत समस्याओं के बारे में दो बातें कहना चाहूंगा । इस देश में अभी मैंने जैसा कहा एक द्वेष की भावना बहुत चल रही है, उसी का दौर-दौरा लगता है । हिंसा का भी दौर-दौरा है । हमें इसको बदलना पड़ेगा । अहिंसा का जो देश है, अहिंसा का जो गढ़वारा है, इस देश में हिंसा का चलन, यह अच्छा नहीं है । हमारे लिए भी और सारे विश्व के लिए । क्योंकि भारत विश्व शांति को मानता है, विश्व शांति के लिए प्रयास करता आया है और अब हम रे ही देश में शांति नहीं रहेगी तो विश्व शांति के बारे में बोलने का हमें हक भी नहीं रहता, अधिकार भी नहीं रहता ।

21

पंजाब की समस्या है, कश्मीर की समस्या है । यहां हिंसा बहुत चल रही है । अलगाववाद, आतंकवाद का दौर-दौरा है । मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूं कि आतंकवाद से किसी को कुछ मिलना नहीं है । जानें नष्ट हो जाती हैं, रक्तपात होता है, लेकिन इसका कोई दूसरा नतीजा, कोई अच्छा नतीजा नहीं होता और जिस मकसद से वह यह कर रहे हैं, वह मकसद बिल्कुल ही उनको हासिल नहीं होगा । मैं चाहता हूं कि हम शांति के रास्ते पर वापिस आएं, हिंसा में जो लगे हुए हैं, वह शांति की तरफ आएं और इस देश की जो समस्या है, पंजाब की भी जो समस्या है, उसको हल करने में, कश्मीर की समस्या को हल करने में हमारा साथ दें । सब मिलकर हल अवश्य ढूंढ सकते है । ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका हल हम नहीं ढूंढ सकते, नहीं पा सकते । पंजाब में हम चुनाव चाहते हैं । चुनाव अवश्य करवाना चाहते है, लेकिन हम यह नहीं चाहते और इस को बर्दाश्त नहीं करेंगे कि चुनाव को अलगाववाद के लिए इस्तेमाल किया जाए । हमारा एक संविधान है, उसी संविधान के भीतर चुनाव अवश्य होंगे और करवाएंगे । कश्मीर के सिलसिले में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि वहां भी जो आतंकवाद है, उससे हम लोहा लेंगे, उस पर काबू पाएंगे और हम यह भी कहना चाहते हैं कि कश्मीर के सिलसिले में, पाकिस्तान के हमारे बीच में एक शिमला की संधि है, शिमला का समझौता है, उसी के सिलसिले में हम अपनी समस्याओं को या अपने प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश करेंगे । आज तक यही होता आया है, आगे भी यही होगा । हमें किसी की मध्यस्थता की कोई आवश्यकता नहीं है । हम पड़ोसी देश है, आपस में बैठकर हम इन चीजों को सुलझा सकते है । आवश्यकता इस बात की है कि कुछ उधर से सद्भावना हो और जो उनकी तरफ से कार्यवाही हो रही है यहां की हिंसा को हवा देने की, वह प्रयास उधर से बंद हो जाएं तो सारी बातें सुलझ सकती हैं, इसमें कोई संदेह नहीं ।

दो साल, तीन साल से एक विचित्र समस्या यहां उठ खड़ी हुई है-- मस्जिद की और मंदिर की । हमारे देश की बुनियाद है सेकुलरिज्म, धर्मनिरपेक्षता, धर्महीनता नहीं और धर्म के नाम से सांप्रदायिकता न फैलाना नहीं । हम

22

धर्मनिरपेक्ष रहना चाहते हैं । धर्म व्यक्तिगत चीज है । कोई मंदिर जाये, कोई मस्जिद जाए, इससे कोई सरोकार नहीं है हमारी सरकार का और सरकार की नीतियों का और सरकार के कार्यक्रमों का । इस धर्मनिरपेक्षता को हम छोड़ेंगे नहीं । हमारी सरकार चलाने के लिए भले ही हमें और लोगों की आवश्यकता हो, उनकी मदद चाहिए हो, लेकिन इन मूल सिद्धांतों को छोड़कर हम कभी भी इस देश को आगे नहीं बढ़ा सकते । इस देश के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, जिस दिन हम धर्मनिरपेक्षता को छोड़ेंगे । इसलिए, हरगिज, इसे छोड़ना नहीं है । धर्म ऐसी चीज है, लोगों को जोड़ने वाली एक आध्यात्मिक चिंतन पैदा करने वाली और लोक-परलोक को सुधारने वाली । ऐसे धर्म का जो उपयोग हो रहा है राजनीति के लिए और केवल किसी चुनाव में कुछ वोट प्राप्त करने के लिए यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए । मैं उम्मीद करता हूं कि लोग इस बात को समझ जाएंगे, ताड़ जाएंगे और इस तरह का प्रयास वह आगे असफल कर देंगे । हम धर्मनिरपेक्षता में इस बात को भी मानते हैं कि यहां के जो अल्पसंख्यक हैं, उनको पूरी हिफाजत मिले इसीलिए मायनौरिटी कमीशन को कानूनी जामा पहनाने का कार्यक्रम हम करने जा रहे हैं । किसी धर्म को यहां कोई खतरा नहीं है । मैं इस समय घोषणा करना चाहता हूं जो नारे उठते हैं कि फलाना धर्म खतरे में है, कभी ये धर्म, कभी वो धर्म, ये सब कोरे नारे हैं । इस देश में कभी किसी भी धर्म को किसी प्रकार का खतरा नहीं रहा है और नहीं रहेगा। हम इस बात की जमानत देते हैं । इस सरकार का यह प्रण होगा कि किसी धर्म को कोई खतरा कभी न उठे, न लगे और उस खतरे को एकदम हम नेस्तनाबूद कर देंगे । वह खतरा बिल्कुल नहीं रहेगा । ऐसे नारों से हमें सतर्क रहना है ।

फिर हमारे सामने मंडल कमीशन का एक प्रश्न आया, जो पिछड़ी जातियों, पिछड़े वर्गों के हमारे भाई-बहनों से संबंधित है । हम अवश्य चाहते हैं, पहले से यह करते आए हैं, सामाजिक न्याय के कई कार्यक्रम हमने चलाए हैं, कई राज्यों में आज भी वो चल रहे हैं, लेकिन सामाजिक न्याय के लिए हम सामाजिक विघटन तो नहीं चाहते हैं । यह नहीं चाहते हैं कि हिंसा के रास्ते से या एक-दूसरे को आपस में लड़ाने के रास्ते से हम सामाजिक न्याय करने की कोशिश करें । वो होगा नहीं । और उसमें से कोई और पेचीदगियां पैदा हो जाएंगी । हमें यकीन है कि हम शांति के रास्ते से, समझौते के रास्ते से इस चीज को अवश्य सुलझा सकते हैं । मैंने जहां तक और लोगों से बात की है, मुझे लगता है कि इस मामले में काफी सहमति है,

पूरी अभी नहीं है, लेकिन बनाई जा सकती है और मैं चाहता हूं कि उसी सहमति के आधार पर, राष्ट्रीय सहमति के आधार पर इस समस्या को सुलझाया जाए । यह प्रयास हमारा जारी रहेगा । किसान हमारे अन्नदाता, उनके लिए एक बहुत वृहद कार्यक्रम हमारे सामने हैं । किसान यहां अनाज तो पैदा करते है, लेकिन कई ऐसी चीजें हैं, जो और अधिक पैदा करनी होंगी, उनका उत्पादन बढ़ाना होगा और कृषि का उत्पादन जितना बढ़ेगा, हम उसे बाहर भी भेज सकेंगे और हमारा निर्यात बढ़ेगा । हमें विदेशी मुद्रा मिलेगी । मैं उन्हें दावत देता हूं हमारे किसानों को, कि ठीक है कि आपने हमारा पेट भरने का काम तो आज तक किया है, देशवासियों के पेट भरने का, अब चलिए आगे बढ़िए, निर्यात के लिए आप यहां उत्पादन कीजिए और इस निर्यात से देश को मालामाल बनाइए । जवानों के बारे में, मैं यही कहना (तालियां) चाहूंगा कि उनकी भलाई उनकी बहबूदी सरकार की नजर में हमेशा है और रहेगी, उसी सिलसिले में जो योजनाएं हमारे सामने हैं, उनको पूरा-पूरा अभी बताया नहीं जा सकता, समय नहीं है, लेकिन मैं उनको यह यकीन देना चाहता हूं कि उसके लिए हम योजनाएं बना रहे हैं और उनकी भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे ।

साथियो, आज हमारे देश के सामने जो मुख्य समस्या है, वह आर्थिक है । हमें अपनी पैदावार बढ़ाना है, उत्पादन बढ़ाना है और साथ ही साथ इस देश की दौलत बढ़ानी है । जब दौलत नहीं बढ़ती है तो वितरण के लिए, बांटने के लिए कुछ नहीं रहता और गरीबी बांटना यह कोई बड़ी बुद्धिमानी का काम नहीं । तो पहले हम दौलत पैदा करें और साथ ही साथ न्यायसंगत रूप में उसको बांटने की भी चेष्टा करें, उसका भी हम कार्यक्रम बनाएं और यह सरकार इन दोनों को अपने सामने रख कर चल रही है । रोजगार बढ़ाना है और रोजगार बढ़ाने के लिए भी हमारे पास औद्योगिकरण की आवश्यकता है । उद्योग पुराने ढंग से नहीं चल सकते । इसलिए उनके लिए एक नया वातावरण बनाना पड़ेगा । उसमें हम लगे हुए हैं । उद्योग की क्षमता नहीं बढ़ेगी तो हम फिर पीछे रह जाएंगे और दुनिया के जो मार्केट हैं, मंडियां हैं वहां और लोगों के साथ हम स्पर्धा नहीं कर सकेंगे, पीछे रह जाएंगे । इसलिए उसकी क्षमता को बढ़ाना है । आर्थिक नीतियों के साथ-साथ हमें यह भी देखना है कि इस देश में विघटन न हो । इस देश में सामाजिक इंतशार, ऐसी बात न हो कि लोग एक-दूसरे के खिलाफ लड़ने में ही अपना सारा समय और अपनी शक्ति बर्बाद करते रहें । इसको रोकना है, किसी भी कीमत पर उसे रोकना है, मैं आपसे

कहना चाहता हूं । समाज की एकता और देश की एकता, यह दोनों अलग-अलग नहीं है । वह एक ही चीज है, दोनों पहलू हैं एक ही चीज के और इन दोनों को भी सम्भालना है और मैं समझता हूं कि यह हमारा परम कर्तव्य है, प्रथम कर्तव्य है कि हम देश की एकता को बनाए रखें, समाज की एकता को, समाज की अखण्डता को और समाज में जो संतुलन है, समाज में जो आपसी मेलजोल है उसे कभी भी धक्का न लगने पाए इसके लिए हम पूरा-पूरा प्रयास करेंगे और यह हमें करते रहना है । जैसा कि मैं कहता हूं कि यह हम सब का कर्तव्य है और इस का हमको पालन करना पड़ेगा । मैं कई बातें आपसे कहना चाहता था लेकिन समय नहीं है । समय-समय पर हम आपसे कहते रहेंगे कि सरकार ने क्या-क्या योजनाएं बनाई हैं और क्या करने वाले हैं । आज मैं इतना ही कहूंगा कि देश एक बड़े खतरनाक नुक्कड़ पर है, कई उसको खतरे लगे हुए हैं, अन्दरूनी हैं, बाहर के बारे भी हैं । इनसे लोहा लेने के लिए इनसे निपटने के लिए एकता की बड़ी आवश्यकता है ।

मैं आपको फिर एक बार आज के इस शुभ अवसर पर मुबारकबाद देते हुए शुभ कामनाएं आपको देता हूं कि यह साल, आज से अगला जो साल है स्वतंत्र भारत का यह हम सब के लिए शुभदायी हो, सब के लिए अच्छा साबित हो और देश के लिए उन्नति के सोपान आगे बढ़ाए और देश को परवान चढ़ाए । मैं आप सब लोगों का मशकूर हूं, आभारी हूं कि आपने मेरी (तालियां) बात सुनी और मैं यह उम्मीद करता हूं कि आप अपना जो कर्तव्य है उसे निभाने में और सरकार को जो कर्तव्य है उसे निभाने में सरकार की सहायता करेंगे । आप और हम अलग नहीं हैं । हम सब को मिल कर यह काम करना है । चलिये हम सब मिल कर आगे बढ़ें । धन्यवाद, नमस्कार । (तालियां) अब मैं जय हिन्द का नारा लगाऊंगा आपसे प्रार्थना है कि आप जोर-शोर से ये नारा लगाएं, जय हिन्द, और भी जोर से जय हिन्द । जयहिन्द ।